Sub:- Philosophy
Class- B.A. Part-2 (Hons)
Paper- IV

स्पीनोजा का विकार या प्रमाय का सिद्धान्त
(Spinoza's Concept of Modes)

द्रव्य अथवा ईश्वर परम सत्ता है जो अनुपम, अद्वितीय एवं अनन्त गुणों से परिपूर्ण है। इन गुणों की कल्पना भी ईश्वर के अभाव में नहीं की जा सकती। लेकिन ससीम मानव ईश्वर के असंख्य गुणों में केवल विचार और विस्तार को ही जान सकता है। फिर ईश्वर और विश्व भिन्न नहीं बल्कि एक हैं। परम सत्ता के दो अलग-अलग नाम हैं। अतः सत्य एक है, अनेकता असत्य। परन्तु विश्व में अनेकता का बोध होता है, उसका कारण क्या है, ~~आत्मा~~ आत्मा क्या है? स्पीनोजा ने इसी समस्या के समाधान के लिए विकार या प्रमाय की सहायता ली है। 'प्रमाय' को 'विकार' कह कर सम्बोधित किया जाता है। अब प्रश्न उठता है कि प्रमाय या विकार क्या है? स्पीनोजा के अनुसार द्रव्य के कुछ अनिवार्य गुणों के अतिरिक्त कुछ आगंतुक धर्म भी होते

हैं। ये आगंतुक धर्म द्रव्य के नित्य लक्षण नहीं हैं। इन्हीं को द्रव्य का पर्याय या विकार कहते हैं। इसका अस्तित्व द्रव्य सापेक्ष रहता है। द्रव्य के बिना इसका ज्ञान नहीं हो सकता है। यह द्रव्य पर आश्रित है। जहाँ द्रव्य स्वतंत्र वहीं ~~द्रव्य~~ पर्याय परतंत्र है। पर्याय द्रव्य के आगंतुक लक्षण है। ये गुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है।

स्पीनोजा द्रव्य के अस्तित्व एवं सार तत्व को एक मानते हैं। वहीं विकारों के अस्तित्व एवं सारतत्व को एक दूसरे से भिन्न मानते हैं। जहाँ द्रव्य एक और अद्वितीय है, वहीं विकार अनेक हैं। द्रव्य नित्य, असीम, पूर्ण, उद्भव और विनाश से रहित एवं सामान्य है। इसके विपरीत विकार अनित्य, सीमित, अपूर्ण, उत्पन्न एवं विनाशवान तथा विशेष है। स्पीनोजा द्रव्य को नित्य एवं विकारवान दोनों मानता है। जैसे - सूर्य की उपस्थिति मात्र से प्रकाश की किरणों का निकलना स्वाभाविक है। उसी प्रकार से द्रव्य से विकारों का होना तार्किक रूप से प्रमाणित है।

स्पीनोजा ईश्वर को एक नित्य, अद्वितीय, स्वतंत्र व अपरिणामी मानता है। वहीं दूसरी

और विश्व को अनित्य, अनेक एवं परिणामी मानता है। पर्याय द्रव्य के रूपान्तरण मात्र है इसलिए द्रव्य से अलग इसकी कोई सत्ता नहीं है। जिस प्रकार सागर से अलग उसके लहरों, ज्वारभाटा का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता है उसी प्रकार द्रव्य से अलग पर्याय का कोई अस्तित्व नहीं होता है। विश्व में अनेक प्रकार की विविधताएँ है, इन्हीं विविधताओं को स्पीनोजा पर्याय के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

स्पीनोजा के अनुसार पर्याय के दो प्रकार होते है। (i) असीम पर्याय (ii) ससीम पर्याय

(i) असीम पर्याय :- यह पर्याय अनन्त ईश्वर का स्वरूप होने के कारण असीम और निरपेक्ष है। यह वह पर्याय है जिससे द्रव्य के गुणों का अनिवार्य रूपान्तरण होता है। असीम पर्याय सभी विशिष्ट तथा ससीम पदार्थों का सामान्य धर्म होता है।

(ii) ससीम पर्याय :- ससीम पर्याय पर्याय का वह रूप है जिसकी कल्पना असीम से ससीम की सृष्टि करवाने हेतु की जाती

है। विशिष्ट विचार एवं वस्तुओं को ससीम पर्याय कहा जाता है। यह सीमित अस्थायी एवं परिवर्तनशील होता है। ससीम पर्यायों के समूह को संपूर्ण जगत का रूपक कहा जाता है।

पर्यायों के अन्तर्गत द्रव्य के गुणों के असीम और ससीम दोनों रूप समाहित हैं। ईश्वर के स्वरूप के रूप में पर्याय असीम और नित्य है। व्यक्तिगत रूप में पर्याय अनित्य एवं ससीम है। चेतना के रूप में बुद्धि एवं संकल्प नित्य विकार हैं। किन्तु विभिन्न जीवों के रूप में सीमित एवं अनित्य है। प्रत्येक विकार सत्य है क्योंकि उनमें एक ही द्रव्य का प्रकाश है। ईश्वर न केवल अस्तित्ववान वस्तुओं का कारण है बल्कि उनके शाश्वत रूप से अस्तित्व में बने रहने का भी आधार है। अतः एक से अनेक, असीम से ससीम की व्याख्या के लिए पर्याय को मानना आवश्यक है।

सभी विकारों का अंतिम कारण द्रव्य है। द्रव्य निरपेक्ष है। जबकि सीमित वस्तु सापेक्ष है। इस प्रकार कारण एक सीमित वस्तु दूसरे अस्तित्ववान वस्तुओं के द्वारा ही सीमित होते है। द्रव्य की नित्यता के कारण

उनका काल के साथ संबंध असंगत है। प्रत्येक विकार अनिवार्य रूप से अपने पूर्ववर्ती से चालित होते हैं, अन्ततः सारे विकार ईश्वर में समाहित हो जाते हैं। ईश्वर कालातीत है। ईश्वर का संबंध प्रत्ययों की आपसी संबंधों से है। दोनों में समन्वय समानान्तरवाद सिद्धान्त के आधार पर होता है। वैचारिक विकारों की श्रृंखला के समानान्तर विकारों की श्रृंखला का प्रतिपादन होता है।

स्पीनोजा के विकारों के सिद्धान्त के अलोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि वे विकारों के आधार पर ही नित्य अपरिणामी एवं स्वतंत्र द्रव्य से अनेक, परिणामी एवं परतंत्र विश्व की व्याख्या करते हैं। इस प्रकार से स्पीनोजा के दर्शन का आरंभ एक द्रव्य से हुआ एवं उनका अंत विकारों की अनेकता से हुआ। इसलिए हेगेल ने कहा है "स्पीनोजा का ईश्वर उस सिंह के गुफा के समान है, जहाँ अनेक जानवरों का अंदर जाने का पदचिन्ह दिखाई पड़ता है किन्तु उनके बाहर आने का कोई पदचिन्ह दिखाई नहीं पड़ता है।" इसका अर्थ है विकारों से द्रव्य का अस्तित्व सिद्ध होता है परन्तु

द्रव्य से विकारों का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता है। इस प्रकार से स्पीनोजा विकारों की तार्किक व्याख्या नहीं कर पाते हैं। फिर भी परवर्ती दार्शनिकों हेगल, फ्रनो. आदि ने स्पीनोजा के विकार सिद्धान्त का आलोचना किया है, इसमें इसकी सार्थकता सिद्ध है।

अन्त में विकारों के सम्बन्ध में स्पीनोजा का मत है कि वे नित्य नहीं। नित्य केवल द्रव्य या ईश्वर है। विकार विनाश के विषय है। यदि व्यक्तिगत बुद्धि, इच्छा विशेष आकार इत्यादि का निर्माण होता है तो स्वभावतः वे नित्य भी नहीं, कहे जा सकते। हम असीम देश पर यदि एक आकार बना सकते हैं तो उसे मिटा भी सकते हैं। असीम देश नित्य है पर आकार अनित्य, इसी प्रकार द्रव्य नित्य है पर विकार या पर्याय अनित्य।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.